



श्रीरत्नप्रभञ्जरीधर सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

# शीघ्रबोध या श्लोकका प्रबंध.

भाग १३-१४ वा.

संग्राहक.

श्रीमदुपदेश ( कमला ) गच्छीय मुनिभी  
ज्ञानसुन्दरजी ( गयवरचन्दजी )



प्रकाशक.

श्रीसंघफलोधी सुपनादिकी आवंदसे.

प्रबन्धकता.

शाह मंगाराजजी मोणोयन मृ. फलोधी.

प्रथमावृत्ति १०००

विक्रम मदन १९०८

म. बंगलर — श्री. श. नर. चन्द्र. शरण. श्री. सु. ब. व. न. सु. नर. श. सु.



संवत् १९७७ कि. शालमें मुनिधी ज्ञानसुन्दरजी महाराज का चतुर्मासा फालोधी नगरमें हुआ था आपधी का सदुपदेशसे ज्ञानवृद्धि के लिये निम्न लिखत पुस्तके प्रकाशित हुई हैं.

१००० श्रीप्रबोध भाग ४वा शाहा रेखचन्द्रजी लीदमीलालजी कोपर की कर्पणे

१००० श्रीप्रबोध भाग १ शाहा हरिचन्द्रजी फुलचन्द्रजी कोपर की कर्पणे ( भावति २ जी )

१००० श्रीप्रबोध भाग २ वा शाहा अमरचन्द्रजी जोगता-  
जजी सोदाकि कर्पणे से.

१००० श्रीप्रबोध भाग ६ वा शाहा तेनमलजी भीमरीलालजी गोलेप्या तथा सुगनमलजी टटाकी कर्पणे से.

४००० सुरोधनिबन्दावली अष्टविंशती शाहा जुरामलजी हरिचन्द्रजी वेदकि कर्पणे से.

४४०० इन्द्राजुबोध इषम शरिचक्र शाहा धनसुखदासजी आतकरदजी गोलेप्याकि कर्पणे से.

१००० हिंदी भेडकर नामो की गन्धनाथर ज्ञान इन्द्रमालादि कर्पणे से.

१००० वरु निनांका लेगी का उपर की गन्धनाथर ज्ञान इन्द्रमालादि कर्पणे से

१००० अमरचक्र चोरीगी शाहा अमरचन्द्रजी जोगतादजी सोदाकी कर्पणे से.

- १७५०० श्रीसप्त क्लोषी सुपनो भादि कि भाषंदसे.
- २००० तीर्थयात्रा स्तवन.
- १००० अमे साधु शामाटे षषा.
- १००० नन्दीयत्र मूलपाठः
- १५०० इष्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका
- ७००० मात पुष्पो का गुष्ठा एकजीन्द्
- १००० स्तवन संप्रद भाग १ चौ. भा.
- १००० स्तवन संप्रद भाग २ द्वि० भा.
- १००० स्तवन संप्रद भाग ३        "        "
- १००० दान छविमी                        "
- १००० अनुकृपा छविमी                    "
- १००० प्रभवाज्ञा स्तवन                    "
- १००० दिनति शनक
- १००० गीप्रबोध भाग १० वा
- १००० गीप्रबोध भाग ११ वा
- १००० गीप्रबोध भाग १२ वा
- १००० गीप्रबोध भाग १३ वा
- १००० गीप्रबोध भाग १४ वा

१७५००

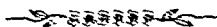
श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं. १

श्री रत्नप्रभासूरी सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

# शीघ्रबोध या थोकनाप्रबंध

भाग १३ वा.



थोकडा नम्बर १.



बहुश्रुती कृत १४ राज.

जहाँपर पांचास्तिकाय है उन्हींको लोक कहा जा  
वह लोक असंख्याते कोहनकोड योजनके विस्तारवाल  
उन्हींका परिमाणके लिये राजसंज्ञा दी गई है. वह राज भी  
असंख्य कोडोनकोड योजनका है उन्हीं राजका परिमाणने १४  
राज परिमाण लोक कहे जाते हैं, वह उर्ध्व-अधोलोककि  
अपेक्षा है. परन्तु कितना उर्ध्व वा अधोजानेपर कितने विस्तार  
आता है. वह सब इन्हीं थोकडे द्वारा कहेगे ।



नाम.	जाडी.	पहली.	घनराज.	परतर.	सूचि.	खण्ड.
रत्नप्रभा	१ राज	१ राज	१ राज	४ राज	१६ राज	६४ राज
शार्करप्रभा	१ "	२॥ "	६। "	२५ "	१०० "	४०० "
वालुप्रभा	१ "	४ "	१६ "	६४ "	२५६ "	१०२४ "
पंकप्रभा	१ "	५ "	२५ "	१०० "	४०० "	१६०० "
धूमप्रभा	१ "	६ "	३६ "	१४४ "	५७६ "	२३०४ "
तमप्रभा	१ "	६॥ "	४२। "	१६६ "	६७६ "	२७०४ "
तमताम०	१ "	७ "	४९ "	१९६ "	७८४ "	३१३६ "

अथोलोकमें सर्वे घनराज १७५ परतरराज ७०२ सूचिराज २८०८ खण्डराज ११२३२ होते हैं.

मंभूमितलसे १॥ राजउर्ध्वे जाये तब पहला दुसरा देवलोक आता है जिसे आदो राजउर्ध्वे जाये तब एक राजविस्तार है वहाँसे आदो राजउर्ध्वे जाय तब १॥ राजविस्तार है वहाँसे पात्र राज जाये तब २ राजविस्तार वहाँसे पात्र राज जाये तब २॥ राजविस्तार है वहाँ पर सुधर्म इशान देवलोक है.

सौधर्म इशान देवलोकसे उर्ध्वे एक राज जाते हैं वहाँपर नीजा चौथा देवलोक आने है जिसे आदो राज जाये तब तीन राजविस्तार है वहाँसे आदो राज जाये





द्वन्द्वलोक	जाडपग.	विस्तार.	यन०	पत्तर.	ग्रन्थि.	सगड०
संश्रुतसं	०॥ राज	१ राज	०॥ राज	२ राज	८ राज	३२ राज
वदसि	०॥ "	१॥ "	१३	४॥ "	१८	७२
वदसि	०॥ "	२॥ "	१॥	४	१६	६४
ग्रथसं श्रुतान	०॥ "	३॥ "	१॥	६॥	२५	१००
वदसि	०॥ "	३॥ "	४॥	१८	७२	२८८
३-४ द्वन्द्वलो	०॥ "	४॥ "	८	३२	१२८	५१२
५ द्वन्द्वलो	०॥ "	५॥ "	१८॥	७५	३००	१२००
६ द्वन्द्व०	०॥ "	५॥ "	६॥	२५	१००	४००
७ द्वन्द्व०	०॥ "	४॥ "	४	१६	६४	२५६
८ द्वन्द्व०	०॥ "	४॥ "	४	१६	६४	२५६
९-१० द्वन्द्व०	०॥ "	३॥ "	४॥	१८	७२	२८८
११-१२ द्वन्द्व०	०॥ "	२॥ "	३३	१२॥	५०	२००
वदसि	०॥ "	२॥ "	१॥	६॥	२५	१००
६ श्री० नी	०॥ "	२॥ "	३	१२	४८	१६२
वदसि	०॥ "	१॥ "	१३	४॥	१८	७२
सगुचर ५०	०॥ "	१	०॥	२	८	३२



- (७) पात्थटेदार (८) अन्नगद्दार (९) पात्थटेरेअन्नरो०  
 (१०) धर्मोदधि० (११) परदासु० (१२) कूरदासु०  
 (१३) अस्कादादर (१४) नरकरअन्नरो० (१५) नरकादाना  
 (१६) अलोकान्नरो (१७) अलीपाद्दार (१८) धेनुवेदना०  
 (१९) देववेदना० (२०) वैभयद्दार (२१) अन्नपरपुत्रद्दार

(१) नामद्दार—गना वनशा शीला अजना गीठा नया मापवती

(२) गोदद्दार—गनप्रभा शार्कर० बालुकाप्रभा पंक. प्रभा धूमप्रभा अन्नप्रभा और अन्नप्रभा ।

(३) जादवगो—अन्नक नरक एषेक गजकी जाती है

(४) पादुलपगो—गोकी नरक एक गजकीजातवानी है. दुर्गी नाम गज, तीर्गी क्या गज, चौथी पांथ गज, पांथनी से गज, लठी माठगी गज, माठनी नरक माठ गज के विचारने है वस्तु नागदिके गीमिया एक गजके विचारने है वनीको प्रमनाती वही जाती है ।

(५) दुर्गीरत्तद्दार—अन्नक नरकी अन्नप्रभा अन्नप्रभा अन्नप्रभा है वस्तु दुर्गीरत्त वेनी नरका १००००० दुर्गीरत्ता १३२००० तीर्गीरत्ता १२०००० चौथीरत्ता १२०००० पांथनीरत्ता ११०००० लठीरत्ता ११६००० माठनीरत्ता १००००० नोदनक है.



(६) पान्यटेपान्यटे अन्तरद्वार-पेटली नरकको पान्यटे पान्यटे ११४=३६ दुर्गता ६७०० तीनरी १२७५० घोदी १६१६६६ पांचमी २४२४० छठी ४२४०० मातमी नरकको पान्यटा एक ही है.

(१०) परोदद्विद्वार प्रत्यक नरकपण्टके निचे २०००० जो० कि. परोदद्वि पकाबन्धा हुना पायी है.

(११) परदासु-प्रत्यक नरकके परोदद्विके निचे अन्ग्यात २ जोजनके परदासु है पकाबन्धा हुना बासु है.

(१२) हरदासु प्रत्यक नरकके परदासुके निचे अन्ग्यात २ जोजनके हरदासु पकला बासु है.

(१३) साकल-प्रत्यक नरकके हरदासुके निचे अन्ग्यात २ जो० का साकल है अर्थात् साकलके अन्तत हरदासु है हरदासुके अन्तत परदासु है परदासुके अन्तत पनोदद्वि है पनोदद्विके अन्ततमे हारीनरु है.

(१४) बाह नरकके अन्तत-परिक नरको निचे अन्ग्यात अन्ग्यात जोजनका अन्तत है.

(१५) नरकबागद्वार-नरकबागद्वार के अन्तत है  
 १) अन्ततमे जोजनके अन्ततमे अन्ततमे अन्ततमे अन्ततमे  
 है २) अन्ततमे अन्ततमे अन्ततमे अन्ततमे अन्ततमे  
 नरक बाग अन्ततमे अन्ततमे अन्ततमे अन्ततमे अन्ततमे



(१२) क्षेत्रवेदनाद्वार-प्रत्येक नरकमें क्षेत्रवेदना दश

दश प्रकारकी है अनन्त चुषा, पीपासा, शीत, उष्ण, रोग, शोक, ध्वर, कुडाशपणे, कर्कशपणे. अनन्त पराधिनपणे यह वेदना हमेंसो होती है पहली नरकसे दुसरी नरकमें अनन्त गुणी वेदना है एवं यावत् छठीसे सातवीं नरकमें अनन्त गुणी वेदना है अथवा नरकोंके नामानुन्वारभी नरकमें वेदना है जैसे रत्नप्रभामें खरकरंड रत्नोंका है तथा यह वेदना बहुत है और शार्करप्रभामें जमीनके स्पर्श तरवारकी धाराने अनन्त गुण तीक्ष्ण है बालुकाप्रभाकी रेती अग्निके भाफीक जल रही है. पंकप्रभा रौद्रमेद चरवीका किचमचा हुआ है धूमप्रभामें शोम-लनिवञ्जाकमें अनन्त गुण त्वारो धूम है. तमप्रभामें अन्धार. तमनभाप्रभामें धीमेनयान अन्धार है इत्यादि अनन्त वेदना नरकमें है

३. देवकृतवेदना-देवतां दुर्गमं दुर्गमं नरकमें गन्नाधामें देवतां दुर्गमं कृतं यदंशे देवतां न के नरके है यदंशे यदंशे नरकमें अन्तर वेदनां देवके कृतं हो नो देव नरकेके नरके वेदना करते है अष्ट नाममें नरकोंमें नरकों आप्रभामें ही शान भाकीक नरके कटन है देवकृत वेदनावाला नरकमें आप्रभामें वेदनावाला नरकी असंख्यातगुणा है

४. वैक्रयद्वार-नारकी जो वैक्रय नरकमें है वह





## थोकडा नम्बर ३

वहूत सूत्रोंसे संग्रह.

( भुवनपतियोंके २१ द्वार. )

(१) नामद्वार	(२) चन्हद्वार	(१५) देवीद्वार
(२) वासाद्वार	(६) इन्द्रद्वार	(१६) परीपदा०
(३) राजधानी	(१०) सामानीक०	(१७) परिचारणा
(४) सभाद्वार	(११) लोकपाल०	(१८) वैक्रयद्वार
(५) भुवनसंख्या	(१२) तावतेसका	(१९) अवधिद्वार
(६) वर्षद्वार	(१३) आत्मरचक	(२०) सिद्धद्वार
(७) वस्त्रद्वार	(१४) अन्नकाद्वार	(२१) उत्पन्नद्वार

(१) नामद्वार—असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार  
चिद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार दिशाकुमार उदद्विकुमार  
वायुकुमार मन्कुमार.

(२) वासाद्वार—भुवनपति देवोका निवास कहां पर  
है ? यह मन्प्रभानरक १=०००० जोजनकी है जिम्मे १०००  
जो० उपर १००० जो० नीचे छोडके मध्यमे १७२=००० जो०  
जिम्मे १३ पान्धडा और १० अन्नरा है उन्होमे उपरका दो  
अन्नरा छोडके १० अन्नगेमे दश जानके भुवनपतियोंकी



शोभनीक है इत्यादि और भी ६ निकायदेवोंकी राजधानी दक्षिणकी तरफ है इसी माफीक उत्तरदिशामें भी समझना परन्तु उत्तरदिशामें तीगच्छउत्पात पर्वत है.

(४) सभाद्वार—एकेके इन्द्रके पांच पांच सभा है (१) उत्पात सभा (२) अभिशेष सभा (३) अलंकार सभा (४) व्यवय सभा (५) सौधर्मी सभा.

(१) उत्पात सभा—देवता उत्पन्न होनेका स्थान है.

(२) अभिशेष सभामें इन्द्रका राजअभिशेष किया जाता है.

(३) अलंकार सभा—देवतोंके भृंगार करते योग वस्त्र-भूषण रहते हैं.

(४) व्यवय सभा—देवतोंके योग धर्मशास्त्रका पुस्तक गहन है.

(५) सौधर्मी सभा—जहां विनमन्दिर चैत्यमंम शम्भकोर आदि हैं और सुधर्म सभामें देवतोंके इन्साफ किया जाना है इत्यादि.

५ भुवनमन्त्राद्वार भुवनपतियोंके भुवन ७७२००००००  
है जिसमें ०००००००० भुवन दक्षिणदिशामें है ३६६००००००  
उत्तरकी तरफ है. देखो चित्र—



(६) वर्ण, (७) वस्त्र, (८) चन्द, (९) इन्द्र.

दण्ड मु०	वर्ण द्वार	वस्त्र द्वार	चन्द द्वार	दशमेन्द्र	उत्तरेन्द्र
(१) अ०	काला	राता	चूडामणि	चमेन्द्र	बलेन्द्र
(२) ना०	धोवला	निला	नागाफण	धरमेन्द्र	भूताइन्द्र
(३) सु०	सुवर्ण	धोला	मुग्ध	वेणुदेव	वेणुदाली
(४) वि०	राता	निला	वस्त्र	हरिकंत	हरिसिंह
(५) अ०	राता	निला	कलश	अग्निमिह	अग्नि-मानव
(६) द्वि०	राता	निला	मिह	पूर्णे	विशेष
(७) द्वि०	पंजर	निला	अथ	जलकंत	जलप्रभ
(८) उ०	अवर्ण	सुपेत	गज	अमृतगति	अमृतबहान
(९) प०	स्वयम्भ	पांच वर्णे	मगर	बेलव	प्रभंजन
(१०) स्त्री०	सुवर्ण	सुपेत	नर्द्धमान	गोप	महागोप













नगर अत्यन्त व्यापक और संख्यागत जोजनके विस्तारवाले हैं सारे सन्तमय हैं परिमाण ध्वनपतियों मापतीक.

(४) राजधानीदार—पाण्डुभिन्न और प्यंतर देवीकी राजधानीयों तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्रोंमें हैं जैसे भुवनपति-योंके राजधानीका धर्मन कीया गया था उनी मापतीक परन्तु विस्तारमे यह राजधानी कम है प्रायः ६२ हजार जोजन के विस्तारवाली है सर्व सन्तमय है.

(५) महाद्वार—एवमेक इन्द्रके पांचपाच महा है यथा

(१) उत्पन्नमहा (२) अभिरूपमहा (३) अलंकारमहा (४) अन्वयमहा (५) गौर्धनमहा विस्तारध्वनपतिये देखो.

(६) पराङ्ग—देवीकी रमतीका धर्म—'यह विस्तार

नोतरस्य संपर्य इती पराङ्गोका धर्म रवान है विनगदेवीके जिले धर्म, गणन और विद्वानके धर्म पराने भूतदेवीके धर्म हानो इती भार्गीह प्यन्तदेवीके मन्त्रका.

(७) समद्वार—विस्तार गणन भूतके विस्तारस्य यत्

(८) विद्वानके सौन्दर्य नोतरस्य संपर्यके मन्त्रका.

## (८) चन्द्रद्वार, (९) इन्द्रद्वार.

देव.	दक्षिण इन्द्र.	उत्तर इन्द्र.	पञ्चपरमन्द.
विद्याभक्त दो इन्द्र	कालेन्द्र	महाकालेन्द्र	कदंबपुत्र
भूतकं दो इन्द्र	सुरसेन्द्र	प्रतिसेन्द्र	मुलघपुत्र
यश " "	पूणेन्द्र	मणिमठ "	पडपुत्र
राज्य " "	निम	महाभिम	गर्गउपकर
क्रिया " "	विश्वर	किंपुत्र	आशोकपुत्र
द्विपुत्र " "	मापुत्र	महापुत्र	चम्पकपुत्र
सोदर " "	अतिकार	महाकाय	नागपुत्र
गन्धर्व " "	गतिगति	गतिपुत्र	तुंबकपुत्र
आगपुत्र " "	मनिदिन्द्र	मामानीन्द्र	कर्दमपुत्र
वायुपुत्र " "	वायुन्द्र	विश्वान्द्र	गुणमपुत्र
शक्तिदी " "	शक्तिन्द्र	शक्तिगण०	वायुपुत्र
भूतकदी " "	इषान्द्र	संशयन्द्र	गर्ग
रुद्र " "	सुरिन्द्र	विश्वान	आशोकपुत्र
महापुत्र " "	हाम्पेन्द्र	हाम्पति०	चम्पकपुत्र
रत्न " "	सेनेन्द्र	महासेनेन्द्र	नागपुत्र
वायुपुत्र " "	वायुन्द्र	संशयतिन्द्र	तुंबकपुत्र

(१०) सामानीक द्वार—सर्व इन्द्रोंके च्यार च्यार हजार देव सामानीक है.

(११) आत्मरक्षक—सर्व इन्द्रोंके सोले सोले हजार देव आत्मरक्षक है.

(१२) परिपदा द्वार—कार्य भुवनपतियोंके माफीक.

परिपदा.	देव परिपदा.	देवी परि०
अर्भितर	८०००	१००
स्थिति	०॥ पत्न्यो०	०। साधिक
मध्यम	१००००	१००
स्थिति	०॥ ५० न्यून	०। ५०
बाह्य	१२०००	१००
स्थिति	०। साधिक	०। न्यून

(१३) देवी—प्रत्यक इन्द्रके च्यार च्यार देवी है एकेक देवीके हजार हजार देवीका परिवार है एकेक देवी हजार हजार रूप वैक्रय कर शक्ती है.

(१४) अनिका द्वार—गजतुरंगादि सात सात अनिका है प्रत्यक अनिकाके ५००००० देवता है सर्व इन्द्रोंके समझना.

(१५) वैक्रयद्वार—इन्द्र सामानीक और देवी एक



हूये हैं इसीसे चंतन्याकि चंतनता प्रगट नहीं होती है वह तो पौद्गलीक सुख है खरा आत्मीक सुख श्री जिनेन्द्र देवोंके धर्मको अंगीकार करनेसे प्राप्त होता है. इति.

सेवंभंते सेवंभंते—तमेवसच्चम्.

—००००००००००००—

थोकडा नं. ५

—००००—

वहूत सूत्रोंसे संग्रह करके.

—००००—

( जोतीपीयोंके द्वार ३१ )

जोतीपी देव दो प्रकारके हैं (१) स्थिर, (२) चर जिस्में स्थिर जोतीपी पांच प्रकारके हैं चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र और तारा यह अढाड़ द्वीपके बाहार अवस्थित हैं पकी इंटके संस्थान हैं सूर्य सूर्यके लक्ष जोजन और चन्द्र चन्द्रके लक्ष जोजनका अन्तर है तथा सूर्य चन्द्रके पचास हजार जोजनका अन्तर है, अन्दर का जोतीपीयोंसे आदी क्रन्तीवाला है हमसोंके लिये चन्द्रके साथ अभिच नक्षत्र और सूर्यके साथ पुष्य नक्षत्र योग जोडते हैं. मनुष्य क्षेत्रकि मर्यादाका करनेवाला मानुसोतर पर्वतके बाहारकी तर्फसे लगाके अलोकसे ११११ जोजन उली तर्फ









सूर्यके मुकुटपर सूर्यमांडलका चन्द्र हैं एवं नक्षत्र ग्रह तार  
ही चन्द्रद्वारा वह देवता पेच्छाना जाता है.

(=) वैमानका पदूलपणा (६) वैमानका जाडपणा —  
क जोजनका ६१ भाग किजे उन्हीसे ५६ भाग चन्द्रका वैमान  
हूला है और २८ भाग जाडा है सूर्यका वैमान ४८ भागका  
हूला २४ भागका जाडा है। ग्रहका वैमान दो गाउका पहूला  
क गाउका जाडा है। नक्षत्रका वैमान एक गाउका पहूला  
गदा गाउका जाडा है। ताराका वैमान आदा गाउका  
हूला पाव गाउका जाडा है सर्व स्फकट रत्नमय वैमान है.

(१०) वैमानवहान—यद्यपि जोतीपीयोंके वैमान आका-  
शके आधारसे रहेते हैं अर्थात् वैमानके पाँद्रलोके अगुरुलघु  
र्याय हैं वह आकाशके आधारसे रहे शक्ते हैं। तद्यपि देव  
अपने मालकका बहुमानके लिये उन्ही वैमानोंको हमेशोंके लिये  
उठाये फीरते हैं कारन अडाइद्वीपके अन्दरके देवोंके स्वभाव-  
प्रकृति गमन करनेके हैं। चन्द्र सूर्यके वैमानकों शोला शोला  
हजार देव उठाते हैं जिस्में च्यार हजार पूर्व दिशाकी तर्फ मुह  
कीये हूवे सिंहके रूप, च्यार हजार दाक्षिण दिशा मुह कीये  
हूवे हस्तिके रूप, च्यार हजार पश्चिम दिशामें मुह कीये हूवे  
वृषभके रूप, च्यार हजार उत्तर दिशामें मुह कीये हूवे अश्वके  
रूप ११ ग्रहवैमानको ८०० देव उठाते हैं नक्षत्रके वैमानकों



सगते सूर्य ४७२६३३१ जोजन दुरोसें द्रष्टिगोचर होता है मके  
शंक्रात तापक्षेत्र ६३६६३३३। उगतो सूर्य ३१८३१३६॥  
द्रष्टिगोचर होते हैं इति.

( १४ ) अन्तराद्द्वार-अन्तरा दो प्रकारसे होता है  
व्याघात-किसी पदार्थकि विचमें श्रोत आवे निर्व्याघात कीसी  
प्रकारकी बाद न होय जिस्में व्याघातापेक्षा जघन्य २६६  
जोजनका अन्तरा है क्योंकि निपेड निलवन्तपर्वतके उपर  
कूटशिखरपर २५० जोजनका है उन्हीसे चाँतर्फ आठ आठ  
जोजन जोतीपीदेव दुरा चाल चलते हैं वास्ते २६६ जो०  
उत्कृष्ट १२२४२ जो० क्योंकि १०००० जो० मेरुपर्वत है  
उन्हीसे चाँतर्फ ११२१ जो० दुरा जोतीपी चाल चलते हैं  
१२२४२ जो० अन्तर है, अलोक और जोतीपीदेवोंके अन्तर  
११११ जो०, मंडलापेक्षा अन्तरा मेरुपर्वतसे ४४८८० जो०  
अन्दरका मंडलका अन्तर है, ४५३३० जो० बाहारका मंडलके  
अन्तर है। चन्द्र चन्द्रके मंडलके ३५। ३३५ अन्तर है सूर्य  
सूर्यके मंडलके दो जोजनका अन्तर है। निर्व्याघातापेक्ष जघन्य  
५०० धनुष्यका अन्तर उत्कृष्ट दो गाउका अन्तर है इति.

( १५ ) संख्याद्द्वार-जम्बुद्विपमें दो चन्द्र दो सूर्य,  
लवणसमुद्रमें च्यार चन्द्र च्यार सूर्य, घातकिखण्डद्विपमें १२  
चन्द्र १२ सूर्य, कालोददि समुद्रमें ४२ चन्द्र ४२ सूर्य, पुष्का-



(१८) सामानीकद्वार-एकेक इन्द्र के च्यार च्यार हजार सामानीक देव हैं.

(१९) आत्मरक्षक-एकेक इन्द्र के शोला शोला हजार आत्मरक्षक देव हैं.

(२०) परिपदा-एकेक इन्द्र के तीन तीन परिपदां हे अभितर परिपदा के ८००० देव, मध्यम के १०००० चारा की १२००० देव हैं और देवी तीनों परिपदा मे १००-१००-१०० हैं.

(२१) अनिकाद्वार-एकेक इन्द्र के सात सात अनिका प्रत्यक अनिका के ५८०००० देवता हैं पूर्ववत्.

(२२) देवी-एकेक इन्द्र के च्यार च्यार अग्र महेपि देवीयों हैं एकेक के च्यार च्यार हजार देवीका परिवार है प्रत्यक देवी च्यार च्यार हजार रूप वैक्रयकर शक्ती हैं ४००० १६००० ६४०००००० कुल देवी हैं ।

(२३) गति-सर्वसे मंद गति चन्द्रकी, उन्होंसे । शीघ्र गति सूर्यकी, उन्हों से शीघ्र गति ग्रहकी, उन्होंसे शीघ्र गति नक्षत्र कि, उन्होंसे शीघ्र गति तारोंकी है, अर्थात् सर्वसे मन्द गति चन्द्रकी ओर शीघ्रगति तारोंकी हैं ।

(२४) ऋद्धि-सर्व से स्वल्पऋद्धि तारोंकी, उन्होंसे महाऋद्धि नक्षत्र कि, उन्होंसे महाऋद्धि ग्रहकी, उन्हीसे महा-





[३१] उत्पन्न—हे भगवान् सर्व प्राणभूत जीव सत्त्व जोतीपी देवों परे पूर्व उत्पन्न हुआ ? हे गौतम एकवार नहीं किन्तु अनन्ती अनन्ती बार जोतीपी देवों पर उत्पन्न हुआ है परन्तु देव होना पर भी जीवकों आत्मीक सुख नहीं मीला आत्मीक सुख के दाता एक वीतराग है वास्ते उन्होंकी आशाका आराद्धि बनना चाहिये इति.

तेवभंते तेवभंते तमेव तच्चम्.

## थोकडा नम्बर ६.

बहुतसूत्रसे संग्रहकर.

( वैमानिकदेवोंका द्वार २७ )

१ नानद्वार	१० इन्द्रनाम द्वार	१६ देवीद्वार
२ वानाद्वार	११ इन्द्रवैमान	२० वैक्रयद्वार
३ संस्थानद्वार	१२ चन्द्रद्वार	२१ अवापिद्वार
४ आधारद्वार	१३ मामानीक	२२ परिचरग्या
५ पृथ्वीपण्ड०	१४ लोकपाल	२३ पुण्यद्वार
६ वैमान उचपण्डो	१५ तावत्रिनका	२४ निद्रद्वार
७ वैमान संख्या	१६ आन्तरिक	२५ मवद्वार
८ वैमान विन्ना	१७ अनिकाद्वार	२६ उत्पन्नद्वार
९ वैमान वरुद्वार	१८ परिपदाद्वार	२७ अन्पावहृत्त्व



५-६-७-८- देवलोक और नौग्रीवंग ६ यह पूर्णचन्द्र के आकार एक दुसरेके उपरा उपर है च्यार अणुत्तर वैमान तीखुणा च्यार दिशामे है सर्वार्थसिद्ध वैमान गोलचंद्र संस्थान है.

[४] आधारद्वार-वैमान और पृथ्वीपंड रत्नमय है परन्तु वह किसके आधार है ? पहला दुसरा देवलोक घणोदद्धि के आधार है तीजा चौथा पांचवा घण वायु के आधार है छटा सातवा आठवा देवलोक घणोदद्धि घण वायु के आधार है शेष वैमान वायु सर्वार्थसिद्ध वैमानतक केवल आकाश के ही आधार है.

(५) पृथ्वीपण्ड (६) वैमानकाउचा (७) वैमान और परतर (८) वर्ण.

वैमान	पृथ्वीपण्ड	वै० उचा	वै० नग्या	वर्ण	परतर
१	२७०० जो	५०० जो	३२ लक्ष	५ वर्ण	१३
२	२७०० ..	५०० ..	२२ ..	५ ..	१३
३	२६०० ..	६०० ..	१२ ..	४ ..	१२
४	२६०० ..	६०० ..	२ ..	४ ..	१२
५	२५०० ..	७०० ..	४ ..	३ ..	६
६	२५०० ..	७०० ..	५० हजार	३ ..	५



सुभासत, श्रीवल्ल, नन्दीवर्तेन, कामगन्तानावैमान मणोगम  
प्रीयगम विनत सर्वतोमद्र.

( १२ ) चन्ह, ( १३ ) सामानीक, ( १४ ) लोकपाल,

( १५ ) ताव० ( १६ ) आत्मरक्षद्वार.

इन्द्र.	चन्ह.	साम०	लो०	ता०	आत्म०
शक्रेन्द्र	मृग	२४०००	४	३३	३३६०००
इशानेन्द्र	महेप	२००००	४	३३	३२००००
संनक्त०	छपर	७२०००	४	३३	२२८०००
महेन्द्र	सिंह	७००००	४	३३	२२००००
वहसेन्द्र	बकरा	६००००	४	३३	२४००००
शंकरेन्द्र	देवका	५००००	४	३३	२०००००
वहाशुकेन्द्र	अश्व	४००००	४	३३	१६००००
वहसेन्द्र	हस्ती	३००००	४	३३	१२००००
शिवेन्द्र	नय	२००००	४	३३	२००००
मधुसेन्द्र	गरुड	१००००	४	३३	४००००

( १७ ) अनिकाद्वार-प्रत्येक इन्द्रके सात सात अनिका

है. यथा-राज. तुरंग. रथ. वृषभ. पैदल. गन्धर्व नादिक-मृत्यु-  
कारक प्रत्येक अनिकाके देव अपने अपने सामानीकदेवोंसे  
१२७ गुणें हैं जिन शक्रेन्द्रके २४००० सामानीकदेव हैं उन्होंसे













१३॥ अंगुल एक यव एक युक्त एक लिख छे बालाग्र पांच व्यवहारीय परमाणु इतना विस्तारवाली परादि है। एक जगति (कोट) एक पद्मवर वेदिका एक वनखंड च्यार दरवाजा कर अति शोभनिक है। इन्ही जन्मुद्विपका दक्षिण उच्चर भरत-क्षेत्र परिमारा खंड किया जाय तो १६० खंड होता है यंत्र।

क्र. सं.	क्षेत्र नाम.	खंड.	जोवन परिमाण.
१	भरतक्षेत्र	१	५२६ + ६
२	सुलहोमवल्गपर्वत	२	१०५२ + १२
३	हेमवपक्षेत्र	४	२१०५ + ५
४	महाहोमवल्गपर्वत	=	४२१० + १०
५	हरिवामक्षेत्र	१६	=४२१ + १
६	निपेटपर्वत	३२	१६=४२ + २
७	महाविदेहक्षेत्र	६४	३३६=४ + ४
८	निलवल्गपर्वत	३२	१६=४२ + २
९	रन्ध्रवामक्षेत्र	१६	=४२१ + १
१०	रुपापर्वत	=	४२१० + १०
११	एरुवपक्षेत्र	४	२१०५ + ५
१२	सोमवर्गपर्वत	२	१०५२ + १२
१३	पद्मवल्गक्षेत्र	१	५२६ + ६

जोवनता १६ ना भायको पला केडने के.

६०—१००००० जोवन



(३) वासाद्वार—इन्हीं लक्ष योजनके विस्तार वाला जम्बुद्विप मे मनुष्य रहेनेका वासक्षेत्र ७ तथा १० है यथा- (१) भरतक्षेत्र (२) एरभरतक्षेत्र (३) महाविदहक्षेत्र इन्हीं तीनों क्षेत्रमे कर्मभूमि मनुष्य निवास करते है और (१) हमवय (२) हरणवय (३) हरिवास (४) रम्यक्वास इन्हीं चार क्षेत्रोंमें अकर्मभूमि युगल मनुष्य निवास करते है एवं ७ तथा दश गीना जावे तो पूर्वजों महाविदहक्षेत्र गीना गया है उन्हींका चार विभाग करना (१) पूर्व महाविदह (२) पश्चिम महाविदह (३) देवकूरु (४) उत्तर कूरु एवं १० क्षेत्र होता है। विवरण—

लक्ष योजनके विस्तार वाला जो जम्बुद्विप है जिन्होंने चौतर्फ एक जगति ( फोट ) है वह जगति आठ योजन की उची है मूलमे १२ मध्यमे = उपर ४ योजनके विस्तार वाली है सर्व वज्ररत्नमय है उन्ही जगति के किनारेपर एक गौरी जाल अर्थात्-भरोखाकी लेन आगइ है वह आदा योजनकी उची पांचसो धनुष कि चोडी कोपीसा और कांगरा सर्व रत्नमय है।

जगति उपरसे चार योजनके विस्तारवाली है उन्ही के मध्यभागमे एक पञ्चवरवेदिका आदा योजनकी उची ५०० धनुष कि चोडी दोनो तर्फ निला पनों का स्थाभा पर अच्छा मृन्दर आकारवाली मनमोहक पुतलायों है और भि अनेक









अडाइसो अडाइसो जोजनका भद्रशालवन है वहांसे दक्षिणकि तर्फ निपेडपर्वत तक देवकूरु क्षेत्र और निलवन्त पर्वत तक उत्तर कूरुक्षेत्र है। एकेक क्षेत्र दोदो गजदन्तों कर आदा चन्द्राकार है इन्ही क्षेत्रोंमे युगल मनुष्य तीनगाउ कि अवगाहना और तीन पल्योपम कि स्थिति वाले है देवकूरुक्षेत्रमें कुट सामली वृक्ष चितविचित पर्वत १०० कंचनगिरि पर्वत पांचद्रह इसी माफीक उत्तरकूरुमे परन्तु वह जम्बु सुदर्शनवृक्ष है इति विदहेका च्यार भेद ।

निपेडपर्वत और महा हेमवन्तपर्वत इन्ही दोनो पर्वतोंके विचमे हरिवास नामका क्षेत्र है तथा निलवन्त और रूपी इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे रम्यकवास क्षेत्र है इन्ही दोनों क्षेत्रोंमे दो गाउकी अवगाहना और दो पल्योपम कि स्थिति वाले युगल मनुष्य रहे ते है ।

महाहेमवन्त और चुलहेमवन्त इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे हेमवय नामका क्षेत्र है तथा रूपी और सीखरी इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे एरणवयक्षेत्र है इन्ही दोनों क्षेत्रोंमें एक गाउकी अवगाहाना और एक पल्योपम कि स्थिति वाला युगल मनुष्य रहेते है । एवं जम्बुद्विपमे मनुष्य रहेने के दश क्षेत्र है इन्हीको शास्त्रकारोंने वासा काहा है अब इन्ही १० क्षेत्रोंका लम्बा चौडा बाहा जीवा धनुषपीठ आदिका परिमाण यंत्रद्वारा लिखा जाता है ।











( ५ ) इतल वैतावर—मदावाइ वपटावाइ गन्वावाइ

नालवन्ना यह चार पर्वत १००० जो० उचा २५० जो० धरतीमें नानगुरी साधिक पगडि है धानकी पायलीके आकार एक हजार जो० पहला विन्नागवाले है ।

( ६ ) चितविचिन जमग मजग यह चार पर्वत देव-

हूक उतरहूक युगल क्षेत्रमें निपेड निलवन्नामें २३४ जो० और एक जोजनका नात भाग करना उन्होंने चार भाग दुरे है । यह १००० जो० उचा जोर २५० जो० धरतीमें उडे है हूकमें १००० जो० पहला-विन्नागवाला है मध्य ७५० जो० परते ५०० जोजन विन्नागवाला है ।

( ७ ) मेरुपर्वत—मेरुपर्वत जम्बुद्विपके मध्य भागमें

यह एक लक्ष जोजनका है जिन्में १००० जोजन धरतीमें और ९९००० जो० धरतीमें उतर है मूलमें पहलो १००९० जो० एक जोजनका इग्यारो या दश भाग है धरतिपर दश जोर जोजन विन्नागवाना है उतर इग्यारो जोजन के पीछे एक जोजन कम होते कम होते मूल के सांगपर एक हजार जोन के विन्नागवाला है मध्य जोर नानगुरी साधिक पगडि मेरुपर्वतके चारत एक पदमर वेदांक और एक वनखड यह बरान करने योग्य है मेरुपर्वत के चार वन है यथा  
१ । भद्रशालवन २ । नन्दनवन ३ । सुमानवन  
४ । पंडकवन.





सो० चौड़ी १० जो० उठी वेदिका बनखंड तोरखादि करी  
 संयुक्त है उन्ही च्यार बाबीयों के मध्य भागमे इशानेन्द्रका  
 प्रधान प्रासाद (महल) है वह प्रासाद ५०० जो० उचा  
 २५० जो० विस्तारवाला है यावत् सपरिवार के आसन सहित  
 है। एवं अग्निकोनमें भी च्यार बाबी है उत्पला, गुम्मा नितना  
 उच्चता पूर्ववत् परन्तु इन्ही बाबी के मध्य भागमे शकेन्द्रका  
 प्रासाद है एवं वायुकोनमे च्यार बाबी है लिंगा भिगनाभा अञ्जना  
 अञ्जनप्रभा-मध्यमे शकेन्द्रका प्रासाद सिंहासन सपरिवार  
 नमस्कना एवं नैऋतकोनमे च्यार बाबी श्रीक्रन्ता श्रीचन्द्रा  
 श्रीनर्हीता श्रीनलीता-मध्यभागमें प्रासाद इशानेन्द्रका समस्कना  
 बाबी-बाबी के अन्तरामे जो० सुली जमान है उन्हीं के उपर  
 इन्द्रोका प्रासाद है। भद्रशालवनमे आठ विदिशाओंमे आठ  
 द्वास्तिकुट है वह १२५ जो० धरतीमे ५०० जो० धरतीमे उचा  
 है मूलमे पांचनी जो० मध्यमे ३७५ जो० उपर २५० जो०  
 विस्तारवाला है तीनगुनी भ्राभेरी परदि है। पद्मचर, नित-  
 वन्त, सुहन्ति. अञ्जन गिरि. कुमुद. पोलान. विटिन. रोपस्-  
 गिरि. इन्ही आठ कुंठोंपर कुंठकेनाम देवता और देवतोंका  
 भूवन रत्नमय है उन्हां देवोंका गवधानी आयनी अरानि  
 दिशाने अन्य अम्बुद्विपमे जानापर आते हैं विजय देवदत्त  
 नमस्कना भद्रशालवन पृथ गुच्छा गुनावली तूर कर शांभाव-

















विजय है उन्हींके विचमें सीता नाम नदी है वास्ते सीतानदीके उत्तर तटपर = विजय और दक्षिण तटपर आठ विजय है इनां माफौक पश्चिम महाविदेहमें सीतोदा नदीके दोनों तटपर आठ आठ विजय है एवं विदेहक्षेत्रमें ३२ विजय है उन्हींका नाम—

पूर्व विदेह सीतानदी.		पश्चिम विदेह सीतोदानदी.	
उत्तर तट.	दक्षिण तट.	उत्तर तट.	दक्षिण तट.
१ कच्छ विजय	वच्छ विजय	पद्म विजय	विप्रा विजय
२ सुकच्छ ,,	सुवच्छ ,,	सुपद्म ,,	सुविप्रा ,,
३ महाकच्छ ,,	महावच्छ ,,	महापद्म ,,	महाविप्रा ,,
४ कच्छवती ,,	वच्छवती ,,	पद्मावती ,,	विप्रावती ,,
५ आत्रता ,,	रमा ,,	संखा ,,	वग्गु ,,
६ मंगला ,,	रमक ,,	कुमुदा ,,	सुवग्गु ,,
७ पुरकला ,,	रमणीक ,,	निलीना ..	गन्धीला ,,
= पुष्कलावती..	मंगलावती..	शलीलावती ..	गन्धीलावती ,,

प्रत्येक विजय १६-१८ जोजन दो कलाकी दक्षिणो-  
 तरमें लम्बी है और २-२ । जोजन पूर्व पश्चिममें चौड़ी है  
 तथा एक भरतक्षेत्र और दुमरा एरवतक्षेत्र एवं चक्रवरतोकी  
 ३४ विजय समझना इन्हीं चार्त्तम विजयमें ३४ दीर्घ वैताल्य











(१५) तीगच्छद्रह-निपेडपर्वत उपर मध्यभागमें तीग-  
छनामा द्रह ४००० जो० लम्बा २००० जो० चौडा दश  
जोडका उडा है कमल भुवन वहांपर श्रुतिदेवीका है हैं देवीसे  
दुगुण परिमाणवाला समझना इसी माफीक निलवन्तपर्वतपर  
केशरीद्रह भी समझना परन्तु वह कीर्तीदेवीका कमलभुवन  
समझना तथा युगलक्षेत्रका दश द्रहके नामवाले देवता  
नालिक है सब देवदेवीयोंकी एक पत्न्योपमकि स्थिति है और  
राजधानी अन्य जम्बुद्विपमें समझना शोला द्रहका सर्व कमल  
१६२००१६२० कमल सर्व रत्नमय है इति.

द्रह नाम.	पर्वत उपर.	लम्बा.	चौडा.	उडा.	देवी.
पद्मद्रह	चुलहेम०	१०००	५००	१०	श्रीदेवी
महापद्म	महाहेम०	२०००	१०००	१०	लक्ष्मि
तीगच्छ	निपेड	४०००	२०००	१०	श्रुति
केशरी	निलवन्त	४०००	२०००	१०	शुद्धि
महापुंडरिक.	रूपि	२०००	१०००	१०	हैं
पुंडरिक	सीखरी	१०००	५००	१०	कीर्ती
दशद्रह	जमनीपर	१०००	५००	१०	शिवता १०

शुद्धि माय जोत्रन शम्भु जेलो.

(१०) नदीद्वार-जम्बुद्विपमें १४५६०६० नदी है जिसमें  
चुलहेमवन्तपर्वत उपर पद्मद्रह है उन्ही द्रहने तीन नदी निकली





पञ्चरत्नोका खीला है मणिरत्नका आलम्बन (हाथ पकड़नेका) पागोतीपोंके उपर प्रत्यक प्रत्यक तोरण है वह तोरण अनेक मणि मौक्ताफलदार आदि अनेक भूषण तथा चित्र कर सुन्दर है उन्ही गंगाप्रभासकुण्डके मध्यभागमें एक गंगाद्विपनामका द्विप है। वह आठ जोजन लम्बा पद्मूला है दो कोश पाणिसे उंचा है। सर्व वज्र रत्नमय अञ्छो सुन्दर है। उन्ही द्विपका मध्यभाग पांच प्रकारके मणिसे मृदु स्पर्शवाला है उन्हीके मध्यभागमें गंगादेवीका एक भुवन है वह एक कोपका लम्बो आदा कोशका पद्मूला देशोना एक कोशका उंचा है अनेक स्यांभापुतलीयों मौक्ताफलकी मालाओं यावत् श्रीदेवीना भुवन माफीक मनौहर है वहां गंगादेवी सपरिवार पूर्व किये हूवे मुकृतके फल भोगवती हूइ विचरे है कुण्डका या द्विपका और देवीका नाम सास्वता है अगर वह देवी चवतो दुसरी देवी उत्पन्न हूवे परन्तु नाम तो वहां ही गंगादेवी रहेता है।

गंगाप्रभासकुण्डका दक्षिणके दरवाजेसे गंगानदी निकली हूइ उत्तर भरतक्षेत्रसे अन्य (छोटी) ७००० नदीयोंको साथ लेती हूइ वैताड्यपर्वतकी खंडप्रभागुफाके निचेसे दक्षिणभरतमें धाती हूइ वहांसे ७००० नदीयों अर्थात् नर्व १४००० नदीयोंको साथमें लेके जम्बूद्विपकी जगतिको भेदती हूइ पूर्वका तबयन्मुद्रमें जा-मीली है इन्ही माफीक निधुनामा नदी भी







नं.	नदी.	पर्यायं.	प्रकर्म.	वि० उ०	नि० वि०	म० उ०	वि.	परिमाण.
१	गंगानदी	गुण्डम	पम	०॥ गाउदी	गो०	१० गो०	दु०॥	१४०००
२	गिन्ध	"	"	"	"	"	गो०	१४०००
३	गोहिना	"	"	१ गाउ	१२॥ गो०	२॥ गो०	१२५	२८०००
४	गोहिनगा	महापम	"	"	"	"	गो०	२८०००
५	हरिकुन्ना	"	"	२ गाउ	२५ गो०	५ गो०	२५०	५६०००
६	हरिगन्धोला	निपेट	गीमन्ध	"	"	"	गो०	५६०००
७	गीना	"	"	४ गाउ	५ गो०	१० गो०	५००	५३२०००
८	गीनांदा	गिन्धोला	केयरी	"	"	"	गो०	५३२०००
९	नरकुन्ना	"	"	२ गाउ	२५ गो०	५ गो०	२५०	५६०००
१०	नारिकुन्ना	रुपि	महापुंठ	"	"	"	गो०	५६०००
११	रुपकुन्ना	"	"	१ गाउ	२॥ गो०	२॥ गो०	१२५	२८०००
१२	सुवर्णकुन्ना	गिन्धो	पुंठरि	"	"	"	गो०	२८०००
१३	रक्षा	"	"	०॥ गाउदी	गो०	१॥ गो०	दु०॥	१४०००
१४	रुन्धवन्नी	"	"	"	"	"	गो०	१४०००







१००० जोजन उठा है अर्थात् जम्बुद्विप कि जगतिसे चार्त्तर्क पचणवे पचाणवे हजार जोजन जानेपर चार्त्तर्क दश दश हजार जोजन लवणसमुद्र एक हजार जोजनका उठा है वहासे पचणवे पचणवे हजार जोजन जानेपर घातकि खंड द्विप आता है । लवणसमुद्रके च्यारों दिशामे च्यार दरवाजा है वह जम्बुद्विप माफीक समझना ।

लवणसमुद्रके मध्यभाग जो १०००० जोजनका गोल चक्राकार १००० जोजनके उदस पाणी है उन्ही लवणसमुद्रके मध्यभागमे च्यार पाताल कलशा है (१) पूर्वदिशामे बडवा मुख पातालकलशो (२) दक्षिणदिशामे केतुनामा पातालकलशो (३) पश्चिमदिशामे जेपु (४) उत्तरदिशामे इश्वर पाताल कलशो । यह च्यारो कलसा लक्ष लक्ष जोजन परिमाण लम्बा है मध्यभागमे लक्ष जोजन विस्तारवाला है कलशोका अधोभाग तथा उपरका मुख दश दश हजार जोजनका है उपर कि ठीकरी एक हजार जोजन कि जाडी है कलशोका मुखपर हजार हजार जोजन लवण समुद्रका पाणी है । एकेक कलशाके बिचमे अन्तर २१६२६५ जोजनका है उन्ही ग्रन्थक अन्तरामे १६२१ छोटे कलशा है च्यारो अन्तरामे ७००४ छोटे कलशा है कारण एकेक अन्तरामे कलशोकी नव नव श्रेणि है उन्ही श्रेणिमे कलशा २१५-२१६-२१७-२१८-२१९-२२०-२२१-२२२-२२३ एवं नव श्रेणिका १६७१ कलशा है च्यारो

अन्तराके ७=२४ कलशा होता है यह नवें छोटा पन्ना एक हजार जोजनका लग्ना और मध्यभागमे १००० विम्बार तथा शोधो भाग या मग मो मो जोजनका और दस जोजनकी उपर टीकनी है एवं नवें ७=२२ कलशा है । उन्ही कलशोके तीन तीन भाग करना जिस्मे निचेके ती भागमे वायु है मध्यके ती भागमे वायु और पाणी है उपरके ती भागमे पाणी है । जो निचेका भागमे वायु है वह वैक्रय शरीर करे उन्ही समय उपरका पाणी उच्छलने लग जात है वह प्रत्य-दिनमे दो बखत पाणी उच्छा ला देता है.

नव लवणसमुद्रकि बेल (दगमाला) का पाणी उच्छलता है परन्तु तीर्थकर चक्रवरतादि पुन्यवानोंका प्रभावमे एक बुंद भी निचि नहीं गिरती है अथवा यह लोकस्थिति है मान्यता नाव बतने है और चार पातालकलशोंका अधिपति चार देवता है कालदेव, महाकालदेव बेलवदेव, प्रभंजनदेव एक पन्योपमकि स्थिति तथा ७=२४ कलशोंका देवताकी आधा पन्योपमकि स्थिति है इति पातालकलशा ।

लवणसमुद्रमे पाणिकः दगमाला १०००० जो० चोडा विम्बारवाल १०००० जो० उटा है १०००० जो० का उन्वा है नव १०००० जो० का है नव पाणल उच्छलता है नव दो कोर उन्वा माखी आ-जान है

लवणसमुद्रक मे १०००० अधान टाना नव १००००



स्थितिवाले अनुबेलन्धर देवोंका पर्वत है इन्हीं आठों पर्वतोंपर बेलन्धरानुबेलन्धर नागराजा देवोंका आवास प्रासाद है सर्व रत्नमय देवतोंके योग्य वह प्रासाद ६२॥ जो. उचा ३१। जो. का चोडा अनेक स्थभ कर अच्छा सुन्दर है । इति ।

लवणसमुद्रमे छपनान्तरद्विप है उन्हीं के अन्दर पल्योपम के असंख्यात भागके आयुष्यवाला और २०० धनुष्यकि आवग्गहानावाले युगल मनुष्य रहते है जम्बुद्विपके चुलहेमवन्त और सीखरी पर्वत के निश्राय (सामिपसे) लवणसमुद्रमें दोडोके आकार टापुवों कि लेन गइ है जैसे जम्बुद्विप कि जगतिसे ३०० जोजन लवणसमुद्रमें जावे तब पेहला द्विपा ३०० जोजनका विस्तारवाला आता है उन्ही द्विपासे ४०० जोजन तथा जगतिसे भी ४०० जो० जानेपर दुसरा द्विपा ४०० जोजनके विस्तारवाला आता है । उन्ही द्विपासे ५०० जोजन तथा जगतिसे भी ५०० जोजन जानेपर तीसरा द्विपा ५०० जो० के विस्तारवाला आता है उन्ही द्विपासे या जगतिसे ६०० जोजन जानेपर चोथो ६०० जो० विस्तारवाला द्विप आता है । उन्ही द्विपसे या जगतिसे ७०० जो० जानेपर ७०० जो० विस्तारवाला पाचवा द्विप आता है उन्ही द्विपसे या जगतिसे ८०० जो० जानेपर ८०० जो० विस्तारवाला छठा द्विप आते है उन्ही द्विपसे या जगतिसे ९०० जो० जानेपर ९०० जो० विस्तारवाला सातवा द्विप आता है सर्व लवणस-



घात कि खंड कि तर्फसे लवणमुद्रमे १२०००  
 जोजन आनपर लवणसमुद्रके बेलके बाहारका पूर्वमे दो चन्द्र  
 द्विपा और पश्चिममे दो सूर्य द्विपा बारह बारह हजार जोजनके  
 विस्तारवाला है इन्ही १२ द्विपों उपर देवताका भुवन-प्रासाद  
 है वह प्रत्यक प्रासाद ६२॥ जोजनका उचा ३१। जोजनके  
 विस्तारवाला अनेक स्थाभादिसे अच्छा शोभनिक है लवण-  
 समुद्रके चारुतर्फ पदम्बर वेदिका है विजयादि च्यार दरवाजा  
 है दरवाजे दरवाजे ३६५२००। का अन्तर है लवणसमुद्रमे  
 ५०० जो० का मच्छ भी है ।

इति लवणमुद्राधिकार ।

तेवंभंते तेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

शोकडा नम्बर २.

सूत्र श्री जीवाभिगम प्र. ४.

( घातकिखंड द्विपादि )

लवणसमुद्रके चारुतर्फ बलीयाके आकार च्यार लव जोजन  
 विस्तारवाला घातकिखंड नामका द्विप है वह च्यार लव









परिवारमर्दी	१४५६०००	२६१२०००	२६१२०००
द्र	१६	३२	३२
वैताडपरिवार	३४	६८	६८
वडवताड	४	=	=
वासना-क्षेत्र	७-१०	१४-२०	१४-२०
चन्द्रमपरिवार	२	१२	७२
श्रमपरिवार	२	१२	७२
तीर्थ	१०२	२०४	२०४
श्रेणी	६८	१३६	१३६
गुफा	६८	१३६	१३६
कुलपरिवार	२६२	५४०	५४०
कुलकुंड	५२५	१०५०	१०५०
कुलसिद्धांत	८१	१८२	१८२

मानोपत्र परिवारके बाहार जो आठलक्ष परिमाण पुष्करद्वी  
क्षेत्र है वह मनुष्य मुन्य है अन्दरका पुष्करद्वी क्षेत्र कि नदी-  
पोंका पानी मानोपत्र परिवारको भेदके बाहारका पुष्करद्वीमें  
जाता है ।

आगके द्विपमसूत्रका नाम मात्र लिया जाने है मत्र  
द्विपमसूत्रके न्यार न्यार दरवाजा है ननुद्विपके जगति है





गिरि और उत्तरदिशामें उत्तराञ्जनगिरि है प्रत्यक अञ्जनगिरि १००० जो० धरतिमें ८४००० जो० धरतिसे उंचा है मूल साधिक दश हजार जो० धरतिपर दश हजार जोजन अर्सीखरपर एक हजार जोजनके विस्तारवाला है। साधि तीनगुणी परदि है सर्व अरिष्ट ( श्याम ) रत्नमय है।

प्रत्यक अञ्जनगिरिके सीखरका तला शममादलका तत् माफीक साक है। सीखरके तलाका मध्यभागमें एक सिद्ध यतन अर्थात् जिनमन्दिर है वह १०० जो० लम्बा ५० जो० चोडा ७२ जो० उंचा अर्च्छा सुन्दर रमणिय है उन्ही जिनमन्दिरके च्यारो दिशामें च्यार दरवाजा है वह १६ जो० उंचा ८ जो० पहला च्यारो दिशाके दरवाजोके आगे च्या मुखमंडप है वह १०० जो० लम्बा ५० जो० चोडा १ जोजन साधिक उंचा है। च्यार दरवाजा १६ जो० उंचा जो० चोडा. उन्ही मुखमंडपके आगे प्रेक्षापधरमंडप है वह १० जो० लम्बा ५० जो० चोडा साधिक १६ जोजन उंचा उन्हीके अन्दर ८ जोजन विस्तारवाली मणिपिठ चौतरो ( टाणायंगवृत्ति ) सिंहमन देवदुपवस्त्र तथा वज्रका अंकुश उन्हीके अन्दर घटमान अर्धघटमान मौक़ाफलकी मालाये फुन्दाकर शोभनिक है। उन्ही प्रेक्षापधर मंडपके आगे एक म्भुभ ( छत्री ) वह १६ जोजन साधिक विस्तारवाली है उन्हीके च्यारो दिशामें च्यार मणिपिठ चौतरा है उन्हीके उपर च्या

जिन प्रतिमासंज्ञित गान्धर्वरा स्तुभ सन्धुर मुख क्रिया हवे  
 विराजमान है । उन्हे स्तुभसे आगे एक मण्डपिठ चातरो है  
 वह आठ जोवनके दिग्दारवाला उन्होके उपर चैत्य वृक्ष आठ  
 जोवनको उचा है चर्चन करने योग्य है उन्होके आगे और  
 भी आठ जोवनका मण्डपिठ चातारा है उन्होके उपर महेन्द्र  
 ध्वज ६४ जोवनकी उची और भी छोटी छोटी विजय विज-  
 रान्ति ध्वज है उन्होके आगे नन्दा पुष्करणी बायी १०० जो०  
 लम्बी ५० जो० चौडी १० जो० उडी अनेक कमल पागो-  
 रोया दौरेर चमर हव ध्वज कर शोभनिक है । उन्ही बायी  
 के च्यारो दिशा च्यार बनखंड है यह मूल निद्रायतनके एक  
 दिशा के पदार्थ कहा है एसे ही च्यारो दिशासे समकला तथा  
 पूर्व दिशाके बनखंडमे १६००० गोल आसन १६०००  
 चौखुरा आसन पडा हवा है एसे पश्चिममे और दक्षिणोत्तर  
 दिशासे आठ आठ हजार है वह देवताके आने जाने रखत  
 वह देवताको काम आते है ।

मूल जिनमन्दिरके मध्य भागमे एक मण्डपिठ चातरो १३  
 जोवन लम्बा ५० जो० है उन्ही के उपर एक देवच्छंदो १६  
 जोवन लम्बा ५० जो० मण्डपिठ चातरो जोवन उचा है अर्चो  
 सुन्दर मने मन्मथाने उन्हे मन्मथ सुन्दर से १०० जिनप्रतिमा

१२४ जिनप्रतिमाओं है जैसे यह एक अञ्जन गिरिपर एक मन्दिर कहा है इसी भाषीक च्यारो अञ्जनगिरिपर च्यार मन्दिर समझना सर्वे पदार्थ रत्नमय घडा ही मनोहर है ।

प्रत्यक अञ्जनगिरिपर्वत के च्यारों दिशामे च्यार च्यार बायी है यह बायी एक लक्ष जोजन लम्बी पचास हजार जो० चोडी ओर हजार जोजन कि उडी है पागोतीया तोरशादिसे सुशोभनिक है उन्ही बायी के अन्दर एकेक दक्षिमुखा पर्वत है यह पर्वत १००० जो० उडा है ६४००० उचा है दश हजार जोजन मूलसे ले के सीखरतक पडूला विस्तारवाला है पलरु मंथान है । एवं च्यार अञ्जनगिरिके चार्तरु १६ बायीयों है उन्ही के अन्दर १६ दक्षिमुखापर्वत और १६ पर्वतोंके उपर १६ जिनमंदिर है उन्होका वर्णन अञ्जनगिरि पर्वतोंके उपरका मन्दिर भाषीक समझना.

स्थानायांग वृतिमें प्रत्यक बायी के अन्तरे में दोरो कनकगिरि है एवं १६ बायीयों के अन्तरामे ३२ कनकगिरि अर्थात् श्रवणमय १०० जोजनका उचा पलरु मंथान पर्वत है प्रत्य कनकगिरि के उपर एकेक जिनमन्दिर अञ्जनगिरि भाषीक है एवं च्यार अञ्जनगिरि १६ दक्षिमुखा ३२ कनकगिरि मीलके ४० पर्वतोंके उपर बावन जिनमन्दिर है ।

चार अज्जनगिरि के अन्तराने चार रतीगीरापर्वत हैं वह अठाइसो जोवन धरातिने १००० जो० उचा सर्व स्थान हजार जोवन पहला पलीक संस्थान है प्रत्यक रतीगीरापर्वत के चारों दिशाने चार चार राजधानीयाँ एवं १६ राजधानी हैं वह प्रत्यक राजधानी १००००० जो० के वित्सारवाली है ३६६२२७।३।१२=।१३॥-१-१-१-६ नान्देरी परादि हैं पावन राजधानीका बरान नाकीक समझना जित्ने इशान और नैऋत्यकोन रतीगीराके = राजधानीयाँ तो शकेन्द्र के अग्रनेहियीकी हैं और अग्नि और वायुकोन रतीगीराके = राजधानीयाँ इशानेन्द्र के अग्रनेहियीकी हैं नन्दीश्वर द्विप आती हैं तब वह पर देरती हैं जद नन्दीश्वर द्विपका नव पदार्थ कहते हैं ।

४ अज्जनगिरिपर्वत अज्जनरत्नमय.

१६ दक्षिणुत्तरापर्वत अंकरत्नमय.

३२ कनकगिरिपर्वत कनकमय.

५२ जिनमन्दिर सर्व रत्नोमय.

६६५६ वावन मन्दिराने जिनप्रतिमावे.

२= सुखमंडप ५० मन्दिरके दरवाजेपर.

०= प्रेक्ष्य घग्मंडप " "

२= अधुन.



२१६ जिनप्रतिमाओं स्पृशने शौचकर्म.

२० = वैश्वदेव.

२० = महेन्द्रपूजा.

२० = पुष्करणि वार्षीयों.

१६ वार्षीयों अश्विनगिरीके शौचकर्म.

४ स्तीर्णासपर्वन.

१६ राजधानीयों.

नन्दीधरद्विपके अन्दर बहुतमे भुवनपति वाशनिता जोतीयाँ आर वैमानिकदेव पागी, चौमागी, ममन्मेरी या जिनकल्याणक दिनें यडांपर एकत्र होते हैं जिनमाहिमा भगवन् की मूर्तियोंकी भावभक्ति अर्चनपूजन करते हैं तथा जंपाचारण विद्या चारणमुनिभी वहांकि यात्रा करनेको पधारते हैं यूनोंने बहुतसे विस्तारमे नन्दीधरद्विपका व्याख्यान किया है परन्तु भव्यात्मावोंके कंठस्थ करनेके लिये संक्षेपमे मुदागर यानों थोडाडा-रूपमें लिखदि है वास्ते इन्हींको पेलार कंठस्थ कर फीर यह धुनियोंके पास शास्त्रभ्रवण करो। तोंके बडा ही आनन्द आवेगा इति.

॥ सेवंभते सेवंभंते तमेव सद्यम् ॥











## निगोदके शरीर और जीवोंकि अल्प० ।

## ( ७ ) द्रव्यापेक्षा.

- ( १ ) वादर निगोदके पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोत्र.  
 ( २ ) " " अपर्याप्ता " " असं० गु०  
 ( ३ ) सूक्ष्म " " " " " "  
 ( ४ ) " " पर्याप्ता " " संख्या० गु०  
 ( ५ ) वादर निगोदके पर्याप्ता जीव द्रव्य अनन्त गु०  
 ( ६ ) " " अपर्याप्ता " " असं० गु०  
 ( ७ ) सूक्ष्म " " " " " "  
 ( ८ ) " " पर्याप्ता " " संख्या० गु०

## ( = ) प्रदेशापेक्षा.

- ( १ ) वादर निगोदके पर्याप्ता जीव प्रदेश स्तोत्र.  
 ( २ ) " " अपर्याप्ता " " अनं० गु०  
 ( ३ ) सूक्ष्म " " " " " "  
 ( ४ ) " " पर्याप्ता " " संख्या० गु०  
 ( ५ ) वादर " " " " अनन्तगुणा  
 ( ६ ) " " अपर्याप्ता " " अनं० गु०  
 ( ७ ) सूक्ष्म " " " " " "  
 ( ८ ) " " पर्याप्ता " " संख्या० गु०



# थोकडा नं. ४.



सूत्र श्री आचारांग अध्याय १ उ० १



( द्रव्यदिशा भावदिशा )

पांचना गणधर सौधर्मस्त्वानि अरने शांप्य जन्मुस्त्वानि प्रत्ये कहेते हे हे जन्मु इन्दी संसारके अन्दर कितनेक जीव एते अज्ञानी है कि जिन्होंको यह ज्ञान नहीं है कि पूर्वमवसे में कौन था और कौन दिशाने में यहाँपर आया है. दिशा दो प्रकारके होती है (१) द्रव्यदिशा (२) भावदिशा.

(१) द्रव्यदिशा अज्ञान (१२) प्रकारके है यथा (१) इन्द्रादिशा (पूर्वदिशा). (२) अग्निदिशा (अग्निकोन), (३) इनादिशा (दक्षिणदिशा). (४) नैऋतदिशा (नैऋतकोन); (५) वायुदिशा (पश्चिमदिशा). (६) वायुदिशा (वायुकोन), (७) मीनादिशा. उदरदिशा. = इमाना (उदरकोन). (८) विनादिशा. उच्छदिशा. = विनादिशा. अश्वदिशा. एवं इत्यदिशा है जिसे अर दिशा अर विदिशा इन्दी आद्योक्ता अन्तर अर इत्यदिशाके साथ मिलानसे १८ द्रव्यदिशा होती है इन्दी अज्ञानोंको यह ज्ञान नहीं है कि इन्दी अज्ञान



च्छोलोक क्रमःसर संकोचीत ओर उर्ध्वलोक पुनः विस्तार-  
वाला है अर्थात् कम्परके हथ लगाके नाचता घोषाके आकार  
लोक है वह भी द्रव्यापेक्ष सास्वत है और बर्णादि पर्यायापेक्ष  
अमास्वन है इन्दीमे इत्थर वादीयोंका नीरकार कीया है ।

( ३ ) कर्मवादी—कर्म अनादि से आत्माके गुणोंको  
रोक रखा है जेमे मूर्ध तेजस्वी है परन्तु वादलोंका अवागम  
आनामे तेजको रोक देता है वसे कर्म भी जीवके गुणोंको  
रोक देते हे जेमे—

कर्म	आवर्ण द्रीशान्त	कौनमा गुणोंको रोकै.
ज्ञानारम्भिय	धागिका बहल	ज्ञानगुणको रोकै
दर्शनावर्भिय	राजाका पोलीया	दर्शनगुणको रोकै
वेदानिय	मधुर्नीपत छुगी	असाद गुणको रोकै
मोहनिय	मदगपान पृथग	वायक गुणको रोकै
आयुष्य	केद कीया दूरा	अटलायगाहन गुणको रोकै
नामकर्म	विथकार माफिक	अमर्ति गुणको रोकै
गौथकर्म	कुमकार ..	अगुरु लघु गुणको रोकै
मन्त्रगानकर्म	गजाका भंडारी	वीथ गुणको रोकै

इन्ही आठों कर्मोंने आत्माके आठों गुणोंको रोक रखा है व्यवहारनयसे जीवके शुभाशुभ अध्यवशासे कर्मोंका दल एकत्र होते हैं वह अवधाकल्पक जानेपर जीवके रसविपाक उदय होते हूवे जीव सुख और दुःख भोगवते हैं और काल लब्धि प्राप्त कर कर्मोंसे मुक्त हो जीव मौक्षमे भी जाते हैं यह कर्मोंका अस्तित्व बतलानेसे काल स्वभाव वादियोंका निराकार किया है.

( ४ ) क्रिया वादी--जो जीव कर्म कर सहित है वह जीव सदेव क्रिया करताही रहता है और वह शुभाशुभ क्रिया करनेसे शुभाशुभ कर्म रूप फल भी देती है अर्थात् सकर्मों जीवोंके क्रिया अस्तित्व भाव है और क्रिया का फल भी अस्तित्वभाव है यहांपर अक्रियावादीका निराकरण किया है ।

यह च्यार सम्यग्वाद है इन्हीको यथायोग्य जाननेसे ही सम्यग्द्रष्टीकेहलाते हैं इन्हीके सिवाय जो मनःकल्पत मत्तको धारण करनेवाले जीवोंको मिथ्याद्रष्टी कहा जाते हैं । वह अनादि प्रवाहमें परिभ्रमण करने आये हैं और करते ही रहेगो इम लिये भगवानने दो प्रकारके प्रजा फरमाइ है (१) वस्तुका स्वरूपका ज्ञानकर ममभूना. (२) परवस्तुका त्याग करना अर्थात् जीम आश्रय कर कर्म आरम्भ है इन्हींको रोकना चाहिये.







हे भव्यात्मन् यह उपर लिखा योनिमें परिभ्रमण करता  
अपना जीव अनादिकालसे मारा मारा फीरता है इन्ही योनि-  
को मीटानेवाला श्री वीतरागका ज्ञान है इन्हीकी सम्यक्  
प्रकारे आराधना करो ताकें फीर दुसरीवार योनिमें उत्पन्न  
होनाका कमही न रहे । रस्तु ।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ६

—\*⊙\*—

( बहुश्रुति कृत. )

—\*⊙\*—

( प्रत्येक बोलपर ६२ बोल उतारा जावेगा )

नं.	मार्गणा.	जीवमैदः	गुणस्थानः	योग १५	उप० १२	लेख्या ६
१	समुच्चय जीवमें	१४	१४	१५	१२	६
२	स० अर्पणाक्षामें	७	३	५	३	६
३	स० अ० अनाहारी	७	३	१	३	६

## थोकडा नं. १०

—१०१३—

( घट्टुश्रुति कृत. )

मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
मसुपय जीवमे	१४	१४	१५	१२	६
नारकीमे	३	४	११	८	३
ना० अर्पाता	२	३	३	८	३
ना० अ० अनाशरीक	२	३	१	८	३
ना० अ० आहारीक	२	३	२	८	३
ना० पर्पाता	१	४	१०	८	३
ना० प० आहारीक	१	४	१०	८	३
तीर्यचमे	१४	५	१३	८	३
ती० अर्पाता	७	३	३	८	३
ती० अ० अनाहारीक	७	३	१	५	३
ती० अ. आहारीक	७	३	२	५	३
ती० पर्पातामे	७	५	१२	८	३
ती० प० आहारीक	७	५	१२	८	३
मनुष्यमे	३	१०	१५	१२	६

१५	म० अपर्याप्ता	२	३	३	६
१६	म० अ० अनाहारीक	२	३	१	६
१७	मनुष्य अ० आहारी	२	३	२	६
१८	म० पर्याप्तमे	१	१४	१४	१२
१९	म० प० अनाहारीक	१	२	१	२
२०	म० प० आहारीक	१	१३	१४	१२
२१	देवतावोमे	३	४	११	६
२२	देवतावो अपर्याप्ता	२	३	३	६
२३	देव० अ० अनाहारीक	२	३	१	६
२४	दे० अ० आहारीक	२	३	२	६
२५	देव० पर्याप्ता	१	४	१०	६
२६	देव० प० आहारीक	१	४	१०	६
२७	सिद्धभगवानमे	०	०	०	०

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

## थोकडा नं. ११

( वहू श्रुतिकृत )

अलद्रिया उमे कहते हैं कि जिस्मे वह वस्तु न म  
जेमे मतिज्ञानका अलद्रिया कहनेमे जिन्ही जीवोमे मतिज्ञा  
मादता हो मे पले ते तेजे तमेवे चौदवे इन्ही च्यार गुणस्था  
मतिज्ञानका जनव हे उभी माफाक मर्व स्थानपर समभन





ज्ञानावर्णयिका	१	२	५७	२	१
दर्शनावर्णयिका	१	२	५७	२	१
वेदनियका	०	०	०	२	०
मोहनियका	१	३	११	८	१
आयुष्यका	०	०	०	२	०
नामकर्मका	०	०	०	२	०
गौत्रकर्मका	०	०	०	२	०
अन्तरायका	१	२	५७	२	१
मवेदके	१	६	११	८	१
श्रिवेदके	१४	१४	१५	१२	६
पुरुषवेदके	१४	१४	१५	१२	६
नष्टमकवेदके	२	१४	१५	१२	६
अवेदके	१४	८	१५	१०	६
मकपायके	१	४	११	८	१
क्रोधक०	१	५	११	८	१
मानक०	१	५	११	८	१
माया	१	५	११	८	१
लाभ	१	५	११	८	१
अकपाय	१४	१०	१५	१०	६
मलंग्या	१	१	०	२	०

कृष्णलेखा	१	८	१५	३	३
निललेखा	१	८	१५	३	३
कापोतलेखा	१	८	१५	३	३
तेजोलेखा	१	७	११	३	१
पद्मलेखा	१	७	११	३	१
शुक्ललेखा	१	१	०	२	०
श्रलेखा	१४	१३	१५	१२	६
संयोगिका	१	१	०	२	०
मनयोगिका	१	१	०	२	०
वचन०	१	१	०	२	०
काथयोगि	१	१	०	२	०
श्रयोगि	१४	१३	१५	१२	६
सम्पकट्टी	१२	०	१३	६	६
मिथ्याट्टी	६	१२	१५	३	६
मिश्रट्टी	१४	१३	१५	१२	६
संज्ञिका	१३	५	१०	८	५
असंज्ञिका	२	१४	१५	१२	६
समाहिका	०	०	०	२	०

॥ सर्वभूते सर्वभूते तमेव सच्चम् ॥

# थोकडा नं. १२



( वहूश्रुति कृत )

न.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.
१	घानावर्षीयकर्ममे	१४	१२	१५	१०
२	दर्शना० " "	१४	१२	१५	१०
३	वेदनिय " "	१४	१४	१५	१२
४	मोहनिय " "	१४	११	१५	१०
५	ष्यायुष्य " "	१४	१४	१५	१२
६	नामकर्ममे	१४	१४	१५	१२
७	गौत्रकर्ममे	१४	१४	१५	१२
८	अन्तरायकर्ममे	१४	१२	१५	१२
९	दक्षश्रपभनाराच संहनन	२	१४	१५	१२
१०	श्रपभनागच० " "	२	११	१५	१२
११	नारचनहनन " "	२	११	१५	१२
१२	अद्रनाराच० " "	२	७	१५	१२
१३	कालकान० " "	२	७	१५	१२
१४	द्विबट स० " "	१४			



	वेहटायोनिमें	२	४	६	३
	मिश्रयोनिमें	२	१४	१२	६
	क्रियावादी	२	१	१३	६
	अक्रियावादी	१४	१	१३	६
	अज्ञानवादी	१४	२	१३	६
	विनयवादी	२	२	१३	६
१	आर्तध्यान	१४	६	१५	१०
२	सौद्रध्यान	१४	५	१३	६
३	धर्मध्यान	१	५	१५	७
४	शुद्धध्यान	१	७	११	६
५	वेदनि समुद्घात	१४	६	१५	१०
६	कषाय "	१४	६	१५	१०
७	मरणन्तीक "	१४	५	१३	१०
८	वैफ्रय "	३	६	१३	१०
९	तेजम "	२	५	१३	१०
१०	आहारीक "	१	२	६	७
११	केवली "	१	१	३	२

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव स

## थोकरा नम्बर. १३

—००००००००—

( बहुश्रुत कृत )

नं.	भागला	जी.	गु.	यो.	उ.	से.
१	वागुदेवही आगति	१	४	१०	६	४
२	हारयादि मध्यक शीष्टी	१	६	१४	७	६
३	घत्रती मनवांगमे	१	१	१२	६	६
४	पकान्तगती मध्य - घत्रती	२	२	१३	६	६
५	अप्रमन हारयादिमे	१	२	११	७	६
६	नेत्रोलेशी एकेन्द्रिमे	१	१	३	३	१
७	अमर गुणस्थानमे	१	३	१२	१२	६
८	अमर गु० छप्रस्थ	१	२	१०	१०	६
९	अमर गु० चरमान्त	१	१	१२	८	६
१०	पथाधान मयांगि	१	२	११	६	१
११	गुण० चरमान्त	१४	२	१३	८	६
१२	मयांग गु० चरमान्त	१४	१	१२	८	६
१३	छप्रस्थ गु० च	१०	१	३	१	६

सकपाय गुणस्थान चरमान्त	१४	२	१३	१०	६
नवेद गुं० च०	१४	२	१३	१०	६
व्रतीद्वयस्य गुं०	१	७	१४	७	६
अप्रमत्त हृद०	१	६	११	७	३
हान्यादि संयती	१	३	१४	७	६
हान्यादि अप्रमत्त	१	२	११	७	३
व्रती सकपाय	१	५	१४	७	६
व्रती नवेद	१	४	१४	७	६
व्रती एद्वय	१	७	१४	७	६
नव्यः नवेद	६	७	१५	७	६
नव्य सकपाय	६	=	१५	७	६
व्रती नवेद	७	६	१०	६	६

। संवभते संवभते नवेव मद्रम ॥



## थोकडा नं. १४



( बहुश्रुत कृत )

( २८ लब्धि )

मार्गणा.

आमोसहि	लब्धि
विप्पोसहि	”
जलोसहि	”
खेलोसहि	”
सुव्वोसहि	
संमिन्नश्रोता	”
अवधिज्ञान	
श्रुजोमति	
विपुलमति	”
केवलज्ञान	”
चरण	”
अरिहत	”

गराघर	..	"	"	"	"
चक्रवर्ष	"	"	"	"	"
बलदेव	..	"	"	"	"
वासुदेव	"	"	"	"	"
आहारीक	..	"	"	"	"
बैक्रय	"	"	हवे	हवे	हवे
पुलाक	..	"	नहीं	नहीं	नहीं
तेजोलेख्या	..	"	हवे	हवे	हवे
शीतलेख्या	..	"	"	"	"
कोठबुद्धि	..	"	"	"	"
दीजबुद्धि	..	"	"	"	"
पूर्वघर	"	"	नहीं	नहीं	नहीं
पदानुसारखी	"	"	हवे	हवे	हवे
आर्त्तविल	..	"	"	"	"
सौमंजुषा	..	"	"	"	"
अर्त्तमायनी	..	"	"	"	"

॥ सेवंभते सेवंभते नमेव तच्चम ॥





वैक्रयसे लिये हूवे सर्व द्रव्य गीनतीमे नहीं अर्थात् फीरसे औदारीक वर्गणाद्वारे द्रव्यग्रहन करे तान्पर्य यह है कि औदारीक वर्गणाद्वारे द्रव्यग्रहन करतों जदें तक सम्पूर्ण लोकके द्रव्य औदारीक वर्गणाद्वारे ग्रहन करे बहातक बीचमे दुसरी वर्गणा न आवे वह एक वर्गण कही जावे । इसीमाफीक वैक्रय वर्गणासे द्रव्यग्रहन करतों बीचमे औदारीकादि वर्गणासे द्रव्य लेवेतों गीनतीमे नहीं परन्तु सर्व लोकका द्रव्य वैक्रयसेही लेवे बीचमे दुसरा भव नकरे तों गीनतीमे आवे इसी माफीक सातों वर्गणासे क्रमःसर सम्पुरण लोक द्रव्यग्रहन करे उन्हीको द्रव्यापेचा सूक्ष्म पुद्गल परावर्तन केहते हैं.

( ३ ) क्षेत्रापेचा चादर पुद्गलपरावर्तन—अमंख्याते कोडो न कोड योजनके विस्तारवाला यह लोरु है जिन्ही के अन्दर रहे हूवे आकाश प्रदेश भी अमंख्याते है उन्ही आकाश प्रदेशोंको एकेक समय एकेक प्रदेश निकाला जावे तों अमंख्याते कालचक्र पुर्ण हो जावे इतने आकाश प्रदेश हैं.

एक आकाशप्रदेश पर जीव जन्ममरण कीया है वह गीनतीमे और फीरमे उन्ही आकाशप्रदेशपर भेरे वह इन्ही पुद्गलपरावर्तनेन कि गीनतीमे नहीं आवे इसी माफीक अम्पशं किये हूवे आकाशप्रदेश पर जन्ममरण करे हूवे सम्पुरण लोकआकाशप्रदेशोंको स्पष्ट करे । तार जन्ममरण करती है यह

असंख्याते प्रदेशपर करता है वधायि यहाँपर मौल्यवा एकही प्रदेशकी गीनी गई है। इसी नाकिक प्रत्येक प्रदेशपर जन्म-मरण करते हुवे सन्ध्याए लोक पुरख करदे उन्हीको सेवारेका बादर पुद्गलपरावर्तन केइते है वाल्य यह हुवे कि एकेक प्रदेशपर भूवकालमें जीव अनन्तीवार जन्ममरण किया है बादर पुद्गलपरावर्तनमें काल अनन्ता लगवा है।

( ४ ) सेवारेका छन्द पुद्गलपरावर्तन-पंक्तीवन्ध आकाश प्रदेशको श्रेणि केइते है वह श्रेणियों लोकमें असंख्यायी है जिन आकाशप्रदेशपर जीव जन्मा है उन्ही आकाशप्रदेशकि पंक्तीवन्ध श्रेणियर जन्ममरण करता जावे इन्हीसे सन्ध्याए श्रेणि पुरख करदे अगर बीचमें विचनश्रेणि अर्थात् श्रेणि बहार जन्म करे तो गीनदीमें नहीं एक आचार्य महारानकी नाम्पत्रा है कि जीवना विचनश्रेणि भव करे वह गीनदीमें नहीं दुसरे आचार्यकी नाम्पत्रा है कि वहाँउक विचने शनश्रेणि विचनश्रेणि भव किया है वह भवेही गीनदीमें नहीं है। तन्वके बलागन्ध इमी नाकिक श्रेणि पुरख करे पीछे उन्हीके पानकि श्रेणियर जन्ममरण करे बीचमें विचनश्रेणि न करे तो गीनदीमें अगर करे तो गीनदीमें नहीं इमी नाकिक सन्ध्याए लोकिक श्रेणियोंके जन्म मरण करे उन्हीके सेवारेक छन्द पुद्गलपरावर्तन केइते है इ इमी उन्हीके जन्म अनन्तपुरां लागे है।

( ५ ) कालापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—वीस कोडा-कोड सागरोपमका एक कालचक्र होता है उन्हीका समय असंख्याते है एक कालचक्रके पहला समयमें जीव जन्ममरण कीया फीर दुसरा कालचक्रके पहला समयमें जन्ममरण करे वह गीनतीमें नहीं परंतु अन्य अस्पर्श समयके अन्दर जन्ममरण करे वह गीनतीमें आवे इमी भाफीक जन्ममरण करते करते सम्पुरण कालचक्रके सर्व समयोंपर जन्ममरण करे उन्हीकों कालापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन कहते है । उन्हीमें भी काल अनन्त पुरण होते है ।

( ६ ) कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन—पूर्वोक्त कालचक्रके प्रथम समय जन्ममरण कीया और दुसरे कालचक्रके दुसरे समय जन्ममरण करे तो गीनतीमें शेष समयमें जन्ममरण करे तो गीनतीमें नहीं इसी भाफीक तीसरा कालचक्रका तीसरा समयमें चौथा कालचक्रके चौथा समयमें एवं क्रमःसर समयमें जन्ममरण करे तो गीनतीमें आवे किन्तु विचमें अन्य समयमें जन्ममरण करे तो सब भव गीनतीमें नहीं इमी भाफीक सम्पुरण कालचक्रकों पुरण करदे उन्हीकों कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन कहते है बादरमें सूक्ष्मको काल अनन्तगुणा लगता है ।

। ७ ) भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन — हरकि पनु-

भाग तथा सर्व स्थितिका स्थान असंख्याते है उन्ही असंख्याते स्थानपर जन्ममरण करे जैसे एक स्थान जन्ममरण कर स्पर्श लिया है अब दुसरी दफे उन्ही स्थानपर अनेकवार जन्ममरण करे वह गीनतीमें नहीं आवे परंतु नहीं स्पर्श कीये हुवे स्थानको स्पर्श कर मरे वह गीनतीमें आवे इसी माफीक अस्पर्श कीये हुवे सर्व स्थानोंको जन्ममरण द्वारे स्पर्श करते करते सर्व अध्यवशाय स्थानको स्पर्श करे उन्हीको भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है । कालपूर्ववत्

( = ) भावापेक्षा सूक्ष्मपुद्गल परावर्तन-पूर्वोक्त जो अध्यवशायके असंख्याते स्थान है उन्हीको क्रमःसर स्पर्श करे जैसे प्रथम स्थानको स्पर्श कीया बादमें कालान्तर दुसरेको स्पर्श करे अगर बिचमे अन्यस्थानको जन्ममरण कर स्पर्श करे वह गीनतीमें नहीं परन्तु क्रमःसर करे वह गीनतीमें आवे एवं तीजो चौथो पांचमो छठो यावत् क्रमःसर चरमस्थान स्पर्श करे इन्ही को भी अनन्तकाल लागे है उन्हीको भावारूपेक्षामुक्ष्मपुद्गल पवाचनने केहते है और कितनेक आचार्योंकी यहभी मन्यता है कि जो नास्तिक जय० १०००० वर्ष कि स्थितिमे लगाके ३२ नागरापमकी स्थितिका असंख्याते स्थान है उन्ही सबको अस्पर्श कोस्पर्श कर सब स्थानोंको जन्ममरणद्वारे पुरण कर देवे एवं देवतामे ३? नागरापम तथा मनुष्य तीर्थचमे ३० अन्तर







चरमदाना रहे वह लेके शीलाक पालामें डालदे तब  
 शीलाक पालामें तीन दाने जमा हवे । जिस द्विप या  
 समुद्रमें अनवस्थित पाला गाली हवा था उन्ही द्विप  
 या समुद्र जीतना विस्तारवाला पाला बनाके मरमवके  
 दानामे भरके आगेका द्विप समुद्रमें एकेरुदाना डालते डालते  
 चला जावे शेष चरमका दाना शीलाक पालामें डाले तब शी-  
 लाकपालामें चार दाने जमा हवे । इसीमाफीक अनवस्थित  
 पाला कि नवीनवी अवस्था होते एकेक दाना शीलाकमें  
 डालते डालते लक्ष जोजनके विस्तारवाला शीलाकपाल भी  
 समपुष्प भरा जावे तब अनवस्थित पालाको जहाँ गाली हवा  
 है वहाही छोड़ दे और शीलाकपालको हाथमे ले के एकदाना  
 द्विपमें एकदाना समुद्रमें डालते डालते शेष एकदाना रहे वह  
 प्रतिशीलाकमें डाल देना अथशीलाक गाली पडा है पीछा  
 अनवस्थितका पाला जो कि शीलाकका, चरमदाना जिस द्विप  
 या समुद्रमें पडाथा उन्ही द्विप या समुद्र जीतना अनवस्थित  
 पाला बनाके मरमवके दानामे भरके द्विप समुद्रमें डालता जावे  
 शेष एक दाना रहे वह फौरमें शीलाकपालामें डाले एकेरु  
 दाना डाल के पढ़ले कि माफीक शीलाकको भरके फौर  
 शीलाक का उठाके एकेक दाना द्विप या समुद्रमें डालते  
 डालते शेष एक दाना रहे वह प्रतिशीलाकमें डाले तब प्रति-  
 शीलाकमें दो दाना जमा हवे और अनवस्थित पालामें एकेक

दाना डालके शीलाक पालाको भरे और शीलाकके एकेक दाना प्रतिशीलाकमे डालते जाये इसीमाफीक करते करते प्रतिशीलाक पाला लक्ष जोजनके परिमाण वाला भी सीखा सहित भरा जाये तब अनवस्थित और शीलाक दोनोको छोडके प्रतिशीलाकको हाथमे लेके एक दाना द्विपमे एक दाना समुद्रमे डालते डालते शेष एक दाना रहे वह महा शीलाकमे टलदेना जीस द्विपमे प्रतिशीलाक पाला खाली हूवा है इतना विस्तारवाला और भी अनवस्थितपाला बनाके सरसवसे भरके आगेके द्विप समुद्रमे एकेक दाना डालता जाये पूर्ववत् अनवस्थितपालासे शीलाकपालाको एकेक दानासे भरदे और शीलाक भरा जाये तब शीलाकसे प्रतिशीलाक भरदे और प्रति शीलाक पालासे पूर्ववत् एकेक दाना डालते डालते महाशीकको भरदे आगे पांचमो कोइ भी पाला नही है इसी वास्ते महाशीलाक पाला भरा हूवा ही रहेना देवे और पीच्छले जो अनवस्थित पालासे शीलाक भरे और शीलाक पालासे प्रतिशीलाक भरदे प्रतिशीलाक खाली करनेको अब महाशीलाकपालामे दाना समावेश नही हो शक्ता है वास्ते प्रतिशीलाक भी भारा हूवा रहे और अनवस्थित पालासे शीलाक पाला भर देवे आगे प्रति शीलाकमें दाना समावेश हो नहीं शके इसी वास्ते शीलाक पाला भी भरा हूवा रहे और अनवस्थित पाला भरा हूवा है वह शीलाक पालामे दाना समावेश







पृष्ठा परे गो पर रागी मध्यम अन्वयेक अन्वय है अथवा एक दाना रागीके मीलाये पृष्ठा परे गो उच्छ्रष्ट अन्वयेक अन्वय-ता होता है और दूसरा दाना मीलायेक पृष्ठा परे गो उच्छ्रष्टपुत्रा अन्वये होते है.

उपन्य पुत्रा अन्वये कि रागीको रागी अन्वयाग परेशन परे उर्दी रागीमे दो दाना निकालके पृष्ठा करने मध्यमपुत्रा अन्वयता होता है उर्दी रागीमे एक दाना डालके पृष्ठा करने उच्छ्रष्ट पुत्रा अन्वये होते है और दूसरा दाना डालके पृष्ठा करने उपन्य अन्वये अन्वयता होता है यह विधि अनुमागद्वार यज्ञपुत्रा करी है ।

महान्तर एक आध्यात्मिकाराज कहते है कि जो उपर पांधो उपन्यपुत्रा अमंख्याते है उर्दीका रग करना जीवनेको जीवने गुणा करना जेमे दन्तको दन्तगुणा करनेमे १०० होता है इसी नाशिक अमंख्यातेको अमंख्यातपुत्रा करनेमे जो रागी हो उर्दीको नातमा उपन्य अमंख्याते अमंख्यात कहते है अथवा मनान दो दाना निकालनेमे पानमा मध्यम पुत्रा अमंख्यात होता है एक दाना मीलायेनेस उच्छ्रष्ट पुत्रा अमंख्यात होता है दूसरा दाना मीलायेने उपन्य अमंख्याते अमंख्यात होता है

उपन्य अमंख्याते अमंख्यातके ... है ३-११





और दूसरा दाना डालके पृच्छा करे तो जघन्य प्रत्येक अनन्ते होता है उन्ही रासीकों ओर भी पूर्ववत् त्रीवर्ग करके दो दाना निकालनेसे मध्यम प्रत्येक अनन्ते होता है एक दाना मीला-देनासे उत्कृष्ट प्रत्येक अनन्ते होते हैं और दूसरा दाना मीला-देनेसे जघन्ययुक्ता अनन्ते होते हैं ( इतने अभव्य जीव है )

जघन्य युक्ता अनन्ते को त्रीवर्ग-पूर्ववत् तीनवार वर्ग करके जो रासी आवे उन्ही रासीसे दो दाना निकालके शेष रासीकी पृच्छा करे तो वह रासी पांचमा मध्यम युक्ता अनन्ता होता है एक दाना डालके पृच्छा करे तो जघन्य अनन्ते अनन्ता होता है ।

जघन्य अनन्ते अनन्त को और भी तीनवार वर्ग करे तो भी उत्कृष्ट अनन्ते अनन्त न हूवे उन्ही रासीके अन्दर ६ चोल और भी मीलावे यथा--

- ( १ ) सिद्धोंके सर्व जीव ( अनन्ते हैं )
- ( २ ) निगोदके जीव ( मूत्रमवादर निगोद )
- ( ३ ) वनास्पतिके जीव ( प्रत्येक ओर साधारण )
- ( ४ ) भूत भाविष्य वर्तमान कालका समय
- ( ५ ) परमाणु वादि सर्व पृष्टल स्कन्ध
- ( ६ ) लोकालोक के अज्ञान प्रदेश



